पाठ–9

रेल-यात्रा

–शरद जोशी

पाठ की संरचना

9.1 आइए शुरू करें	9.2 उद्देश्य
9.3 मूल पाठ	9.4 आइए समझें
9.5 भाषा-शैली	

9.1 आइए शुरू करें

आप किसी अखबार या पत्र-पत्रिका के पन्ने पलटते हुए कोई-न-कोई ऐसी रचना अवश्य पढ़ते होंगे जिसे पढ़ते समय आपको जब-तब हँसी आती होगी। पर आप खुल कर हँस भी नहीं पाते होंगे। इनका काम केवल हँसाना मात्र नहीं होता। इन रचनाओं में रचनाकार हमारे आस-पास फैली बुराइयों पर चोट भी करता है। मीठी मार मारता है, जिससे पढ़ने वाले के दिलो-दिमाग पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इसे ही व्यंग्य कहा जाता है। व्यंग्य में बात थोड़ी घुमाकर कही जाती है। जैसे कोई लड़का पढ़ाई पर ध्यान न देकर हमेशा खेलकूद में डूबा रहे तो उसके पिताजी उससे कहते हैं- ''आजकल खूब पढ़ रहे हो तुम, लगता है फर्स्ट डिवीजन लाकर ही रहोगे।' कोई तीसरा आदमी वहाँ हो और पिता की बात सुन रहा हो तो उसे हल्की हँसी आ जायेगी। क्योंकि पिता के कहने का मतलब यह है कि तुमने पढ़ाई पर ध्यान देना एकदम छोड़ दिया है। ऐसे में परीक्षा में पास होना कठिन ही है। इस पाठ में आप ऐसी ही एक व्यंग्य रचना पढ़ेंगे।

9.2 उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- रेल-यात्रा के दौरान होने वाली समस्याओं को समझने की एक अलग दृष्टि विकसित कर सकेंगे।

- रेल-यात्रा के साथ सरकारी तंत्र की तुलना के कारण बता सकेंगे।
- हास्य और व्यंग्यपूर्ण स्थलों का चयन कर सकेंगे।
- व्यंग्य की चुटीली भाषा पर टिप्पणी कर सकेंगे।
- व्यंग्य की विधा को समझ सकेंगे।
- निबंध के सार को लिख उसके महत्त्वपूर्ण अंशों की व्याख्या कर सकेंगे।
- व्यंग्यात्मक निबंध के संरचना-शिल्प (बनावट) का विश्लेषण कर सकेंगे।

क्रियाकलाप

कई बार आपने भी ऐसी यात्राएँ की होंगी जिनमें आपको धक्का-मुक्की, परेशानियाँ उठानी पड़ी होंगी। आप अपना अनुभव अपने शब्दों में लिखिए। आइये, अब हम पाठ को एकबार पढ़ लेते हैं।

9.3 मूल पाठ

रेल विभाग के मंत्री कहते हैं कि भारतीय रेलें तेजी से प्रगति कर रही हैं। ठीक कहते हैं। रेलें हमेशा प्रगति करती हैं। वे मुंबई से प्रगति करती हुई दिल्ली तक चली जाती हैं और वहाँ से प्रगति करती हुई मुंबई तक आ जाती हैं। अब यह दूसरी बात है कि वे बीच में कहीं भी रुक जाती हैं और लेट पहुँचती हैं। पर अब देखिए ना, प्रगति की राह में रोड़े कहाँ नहीं आते। राजनीतिक पार्टियों के रास्ते में आते हैं, देश के रास्ते में आते हैं, तो यह तो बिचारी रेल है। आप रेल की प्रगति देखना चाहते हैं, तो किसी डिब्बे में घुस जाइए। बिना गहराई में घुसे आप सच्चाई को महसूस नहीं कर सकते।

हमारे यहाँ कहा जाता है—ईश्वर आपकी यात्रा सफल करें। आप पूछ सकते हैं कि इस छोटी-सी रोजमर्रा की बात में ईश्वर को क्यों घसीटा जाता है ? पर, जरा सोचिए, रेल की यात्रा में ईश्वर के सिवा आपका है कौन ? एक वही तो है, जिसका नाम लेकर आप भीड़ में जगह बनाते हैं। भारतीय रेलों में तो यह है, आत्मा सो परमात्मा और परमात्मा सो आत्मा ! अगर ईश्वर आपके साथ है, टिकिट आपके हाथ है, पास में सामान कम और जेब में पैसा ज्यादा है, तो आप मंजिल तक पहुँच जाएँगे, फिर चाहे बर्थ मिले न मिले। अरे, भारतीय रेलों का काम तो कर्म करना है! फल की चिंता वह नहीं करती। रेलों का काम एक जगह से दूसरी जगह जाना है। यात्री की जो भी दशा हो। जिंदा रहे या मुर्दा, भारतीय रेलों का काम उसे पहुँचा देना भर है। अरे, जिसे जाना है, वह तो जाएगा। बर्थ पर लेटकर जाएगा, पैर पसारकर कर जाएगा।

जिसमें मनोबल है, आत्मबल, शारीरिक बल और दूसरे किस्म के बल हैं, उसे यात्रा करने से कोई नहीं रोक सकता। वे जो शराफत और अनिर्णय के मारे होते हैं, वे क्यू (लाइन) में खड़े रहते हैं, वेटिंग लिस्ट में पड़े रहते हैं। ट्रेन स्टार्ट हो जाती है और वे सामान लिए दरवाजे के पास खड़े रहते हैं। भारतीय रेलें हमें जीवन जीना सिखाती हैं। जो चढ़ गया उसकी जगह, जो बैठ गया उसकी सीट, जो लेट गया उसकी बर्थ। अगर आप यह सब कर सकते हैं, तो अपने राज्य के मुख्यमंत्री भी हो सकते हैं। भारतीय रेलें तो साफ कहती हैं–जिसमें दम, उसके हम। आत्मबल चाहिए मित्रो! जब रेलें नहीं चली थीं।, यात्राएँ कितनी कष्टप्रद थीं। आज रेलें चल रही है, यात्राएँ फिर भी इतनी कष्टप्रद हैं। यह कितनी खुशी की बात है कि प्रगति के कारण हमने अपना इतिहास नहीं छोड़ा। दुर्दशा तब भी थी, दुर्दशा आज भी है। ये रेलें, ये हवाई जहाज, यह सब विदेशी हैं। ये हमारा चरित्र नहीं बदल सकती हैं।

भारतीय रेलों ने एक बात सिद्ध कर दी है कि बड़े आराम की मंजिलें छोटे आराम से तय होती हैं । और बड़ी पीड़ा के सामने छोटी पीड़ा नगण्य है। जैसे आप ससुराल जा रहे हैं, महीने-भर पहले आरक्षण करा लिया है, घंटा-भर पहले स्टेशन पहुँच गए हैं, बर्थ पर बिस्तर फैला दिया है और रेल उस दिशा में दौड़ने लगी है, जिस दिशा में आपकी ससुराल है। ससुराल बड़ा आराम है, आरक्षण छोटा आराम है। बड़े आराम की मंजिल छोटे आराम से तय होती है।

इसी तरह बड़ी पीड़ा के सामने छोटी पीड़ा नगण्य है। मानिए आपके बाप मर गए। (माफ कीजिए, मैं एक उदाहरण दे रहा हूँ। भगवान उनकी उमर लंबी करे, अगर वे पहले ही न मर गए हों तो।) आप खबर सुनते हैं और अपने गाँव जाने के लिए फौरन रेल में चढ़ जाते हैं। भीड़, धक्का-मुक्का, थुक्का-फजीहत, गाली-गलौज। आप सब कुछ सहन करते खड़े हैं। पिताजी जो मर गए हैं। बड़ी पीड़ा के सामने छोटी पीड़ा नगण्य है।

मैं एक उदाहरण देता हूँ। मानिए, एक कुँवारे लड़के को उसका दोस्त कहता है कि जिस लड़की से तुम्हारी शादी की बात चल रही है, वह होशंगाबाद अपने मामा के घर आई है, देखना चाहो तो फौरन जाकर देख आओ। आरक्षण का समय नहीं है। कुँवारा लड़का आव देखता है न ताव और रेल के डिब्बे में चढ़ जाता है। वही भीड़, धक्का-मुक्का, थुक्का-फजीहत, गाली-गलौज । मगर क्या करे ? लड़की से शादी जो करनी है, जिंदगी भर के लिए मुसीबत जो उठानी है। बड़ी पीड़ा के सामने छोटी पीड़ा नगण्य है।

भारतीय रेलें चिंतन के विकास में बड़ा योगदान देती हैं। प्राचीन मनीषियों ने कहा है कि जीवन की अंतिम यात्रा में मनुष्य खाली हाथ रहता है। क्यों भैया ? पृथ्वी से

स्वर्ग तक या नरक तक भी रेलें चलती हैं। जाने वालों की भीड़ बहुत ज्यादा है। भारतीय रेलें भी हमें यही सिखाती हैं। सामान रख दोगे तो बैठोगे कहाँ ? बैठ जाओगे तो सामान कहाँ रखोगे ? दोनों कर दोगे तो दूसरा कहाँ बैठेगा ? वो बैठ गया तो तुम कहाँ खड़े रहोगे ? खड़े हो गए तो समान कहाँ रहेगा ? इसलिए असली यात्री वो, जो खाली हाथ। टिकिट का वजन उठाना भी जिसे कबूल नहीं। प्राचीन ऋषि-मुनियों ने ये स्थिति मरने के बाद बताई है। भारतीय रेलें चाहती हैं, वह जीते-जी आ जाए। चरम स्थिति, परम हल्की अवस्था, खाली हाथ, बिना बिस्तर, मिल जा बेटा अनंत में, सारी रेलों को अंततः ऊपर जाना है।

टिकिट क्या है ? देह धरे को दंड है। मुंबई की लोकल ट्रेन में, भीड़ से दबे, कोने में सिमटे यात्री को जब अपनी देह भारी लगती है, वह सोचता है कि यह शरीर न होता, केवल आत्मा होती, तो कितने सुख से यात्रा करती। भारतीय रेलें हमें मृत्यु का दर्शन समझाती हैं और अक्सर पटरी से उतरकर उसकी महत्ता का भी अनुभव करा देती हैं। कोई नहीं कह सकता कि रेल में चढ़ने के बाद वह कहाँ उतरेगा ? अस्पताल में या श्मशान में। लोग रेलों की आलोचना करते हैं। अरे रेल चल रही है और आप उसमें जीवित बैठे हैं, यह अपने में कम उपलब्धि नहीं है।

रेल-यात्रा करते हुए हम अक्सर विचारों में डूब जाते हैं। विचारों के अतिरिक्त वहाँ कुछ डूबने को होता भी नहीं । रेल कहीं भी खड़ी हो जाती है। खड़ी है तो बस खड़ी है। जैसे कोई औरत पिया के इंतजार में खड़ी है। उधर प्लेटफॉर्म पर यात्री खड़े इसका इंतजार कर रहे हैं। यह जंगल में खड़ी पता नहीं किसका इंतजार कर रही है। खिड़की से चेहरा टिकाए हम सोचते रहते हैं। पास बैठा यात्री पूछता है-''कहिए साहब, आपका क्या ख्याल है, इस कंट्री का कोई फ्यूचर है या नहीं ?''

''पता नहीं।'' आप कहते हैं, ''अभी तो ये सोचिए कि इस ट्रेन का कोई फ्चूयर है या नहीं?''

फिर एकाएक रेल को मूड आ जाता है और वह चल पड़ती है। आप हिलते-डुलते, किसी सुंदर स्त्री का चेहरा देखते चल पड़ते हैं। फिर किसी स्टेशन पर वह सुंदर स्त्री भी उतर जाती है। एकाएक लगता है, सारी रेल खाली हो गई। मन करता है हम भी उतर जाएँ। पर भारतीय रेलों में आदमी अपने टिकिट से मजबूर होता है। जिसका जहाँ का टिकिट होता है, वह वहीं तो उतरेगा। उस सुंदर स्त्री का यहाँ का टिकिट था, वह यहाँ उतर गई। हमारा आगे का टिकिट है, हम वहाँ उतरेंगे।

भारतीय रेलें कहीं-न-कहीं हमारे मन को छूती हैं। वह मनुष्य को मनुष्य के करीब लाती हैं। एक ऊँघता हुआ यात्री दूसरे ऊँघते हुए यात्री के कंधे पर टिकने लगता

है। बताइए ऐसी निकटता भारतीय रेलों के अतिरिक्त कहाँ देखने को मिलेगी ? आधी रात को, ऊपर की बर्थ पर लेटा यात्री, नीचे की बर्थ पर लेटे यात्री से पूछता है–यह कौन–सा स्टेशन है? तबीयत होती है कहूँ–अबे चुपचाप सो, क्यों डिस्टर्ब करता है? मगर नहीं वह भारतीय रेल का यात्री है और मातृभूमि पर यात्रा कर रहा है। वह जानना चाहता है कि इस समय एक भारतीय रेल ने कहाँ तक प्रगति कर ली है ?

आधी रात के घुप्प अँधेरे में मैं मातृभूमि को पहचानने का प्रयत्न करता हूँ। पता नहीं किस अनजाने स्टेशन के अनचाहे सिगनल पर भाग्य की रेल रुकी खड़ी है। ऊपर की बर्थ वाला अपने प्रश्न को दोहराता है। मैं अपनी खामोशी को दोहराता हूँ। भारतीय रेलें हमें सहिष्णु बनाती हैं। उत्तेजना के क्षणों में शांत रहना सिखाती हैं। मनुष्य की यही प्रगति है।

भारतीय रेलें आगे बढ़ रही हैं। भारतीय मनुष्य आगे बढ़ रहा है। आपने भारतीय मनुष्य को भारतीय रेल के पीछे भागते देखा होगा। उसे पायदान से लटके, डिब्बे की छत पर बैठे, भारतीय रेलों के साथ प्रगति करते देखा होगा। कई बार मुझे लगता है कि भारतीय मनुष्य भारतीय रेलों से भी आगे है। आगे-आगे मनुष्य बढ़ रहा है, पीछे–पीछे रेल आ रही है। अगर इसी तरह रेल पीछे आती रही, तो भारतीय मनुष्य के पास सिवाय बढ़ते रहने के कोई रास्ता नहीं रहेगा। बढ़ते रहो–रेल में सफर करते, दिन झगड़ते, रात-भर जागते, बढ़ते रहो। रेलनिशात् सर्व भूतानां! जो संयमी होते हैं, वे रात-भर जागते हैं। भारतीय रेलों की यही प्रगति है, जब तक एक्सीडेंट न हो, हमें जागते रहना है।

बोध प्रश्न :

1. यात्रा में सहायक तत्त्व कौन है :

   (क) मनोबल (ख) शारीरिक बल (ग) आत्मबल (घ) ये सभी

2. लेखक ने कहाँ की लोकल ट्रेनों का उदाहरण दिया है :

   (क) कलकत्ता (ख) दिल्ली (ग) मुंम्बई (घ) चेन्नइ

9.4 आइए समझें

सबसे पहले पाठ को ठीक से समझने के लिए जानें कि व्यंग्य क्या है?

साहित्य में व्यंग्य लेखन अभिव्यक्ति का एक प्रभावी माध्यम रहा है। वस्तुतः 'व्यंग्य रचना वह विधा है जिसमें तथ्य को सीधा न कहकर उसे जरा घुमा-फिराकर